19 दिवसीय सहभोज पत्र

भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा द्वारा प्रकाशित

20 मार्च 2017 | बहाई माह : बहा (प्रकाश) | बहाई वर्ष–174

''यह प्रत्येक राजा के लिए योग्य होगा कि वह प्रतिदिन स्वयं को निष्पक्षता व न्याय की तुला में तौले तब मनुष्यों के बीच न्याय करे और उन्हें वह करने की सलाह दे जो उनके कदम विवेक व समझदारी के पथ की ओर ले जायें। यह राज्य करने का आधार है और उसका सार–तत्व इन शब्दों से प्रत्येक प्रबुद्ध व्यक्ति जिनसे मानवजाति के कल्याण, सुरक्षा तथा संरक्षण और मानव जीवन की रक्षा जैसे लक्ष्यों को बढ़ावा मिलता है उसे तत्परता से समझ जायेगा।''

–(बहाउल्लाह के पावन लेख, एक संकलन)

विश्व न्याय मन्दिर

1 मार्च 2017

विश्व के बहाईयों को,

परमप्रिय मित्रों,

एक बढ़ते हुए अंतर्सम्बंधित विश्व में, उनकी परिस्थितियों को अधिक दृश्यता प्रदान करते हुए, सभी लोगों की सामाजिक स्थितियों पर, अधिक रोशनी डाली जा रही है। यद्यपि विकास हुए हैं जो आशा प्रदान करते हैं, बहुत कुछ है जिसका भारी बोझ मानवीय जाति की अन्तरात्मा पर पड़ना चाहिये। पक्षपात, विभेद और शोषण मानवता के जीवन का विनाश करती है, जो प्रत्येक मत की राजनीतिक योजनाओं के द्वारा लागू किये गये उपायों से प्रभाव शून्य प्रतीत होता है। इन कष्टों का आर्थिक प्रभाव इतने अधिक लोगों की दीर्घकालीन पीड़ा तथा समाज के गहरे रचनात्मक दोषों का कारण रहा है। कोई भी व्यक्ति जिसका हृदय 'आशीर्वादित सौंदर्य' की शिक्षाओं के प्रति आकर्षित हुआ है, इन परिणामों के प्रति द्रवित हुए बिना नहीं रह सकता है। ''विश्व महान उथल–पुथल की स्थिति में है'', लौह–ए–दुनिया में बहाउल्लाह देखते हैं, ''और इसके लोगों के मन अत्यधिक भ्रांति में हैं। हम 'सर्वशक्तिशाली' से विनती करते हैं कि 'वह' कृपापूर्वक 'उसके' न्याय के प्रकाश से उन्हें प्रकाशित करे, और उन्हें वह खोजने के योग्य बनाये जो उनके लिये सदा तथा सभी परिस्थिति में लाभदायक होगा।'' जैसे–जैसे बहाई समुदाय विश्व की बेहतरी के लिये विचारों व कार्य के स्तर पर योगदान देने का प्रयास करता है, अनेकों लोगों द्वारा अनुभव की गई प्रतिकूल परिस्थितियाँ अधिकाधिक ध्यान दिये जाने की मांग करेंगी।

मानवता के किसी भाग का कल्याण अलंघनीय रूप से सम्पूर्ण के कल्याण से जुड़ा होता है। मानवता का सामूहिक जीवन कष्ट पाता है, जब कोई एक समूह उसके पड़ोस से अलग–थलग होकर स्वयं अपने कल्याण की बात सोचता है या बिना इस बात पर ध्यान दिये, आर्थिक लाभ पाने की कोशिश करता है, कि जो वातावरण सबको जीविका प्रदान करता है उस पर क्या प्रभाव पड़ रहा है ? तब अर्थपूर्ण सामाजिक प्रगति की राह में एक जिद्दी रुकावट खड़ी हो जाती है : बारंबार, सामान्य–हित की कीमत पर लालच व स्वहित पाया जाता है। हद से ज्यादा मात्रा में धन एकत्रित कर लिया जाता है, और इसके कारण जो अस्थिरता उत्पन्न होती है वह इस बात से बदतर हो जाती है कि किस प्रकार राष्ट्रों के बीच और राष्ट्रों के भीतर दोनों में, आय व अवसर इतने अधिक असमान रूप से विस्तारित हैं। लेकिन ऐसा होना आवश्यक नहीं है। फिर भी, ऐसी दशाओं का बहुत कुछ, इतिहास का परिणाम है, उन्हें भविष्य को परिभाषित नहीं करना पड़ता है और आर्थिक जीवन के वर्तमान

तरीकों ने यदि मानवता के किशोरावस्था को संतुष्ट भी किया है, वे निश्चित ही उसकी परिपक्वता के प्रारम्भ होने के काल के लिये अपर्याप्त हैं। उन संरचनाओं, नियमों और प्रणालियों को निरन्तर स्थिर बनाए रखने का कोई औचित्य नहीं है जो सभी लोगों के हित की सेवा करने में स्पष्टतः असफल रहे हैं। प्रभुधर्म की शिक्षाएँ शंका के लिये कोई स्थान नहीं छोड़ती हैं : धन व संसाधनों के उत्पादन, विवरण और उपयोग के लिये एक अन्तर्निहित आयाम है।

एक विभाजित विश्व से एकीकृत विश्व की अवस्थांतर की दीर्घकालीन प्रक्रिया से उभर कर आ रहे तनाव, यहाँ तक कि गहराती हुई दरारें जो छोटे–बड़े समाजों को प्रभावित कर रही हैं, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में महसूस की जा रही हैं। जो तूफानी बादलों की तरह छाए विलापों के लिए निश्चित समाधान का ढांचा प्रदान कर सके, वे तरीके प्रचलित विचारों से बुरी तरह अनुपस्थित हैं, ऐसे सांझे नीतिशास्त्र की विश्व को अत्यधिक आवश्यकता है। वर्तमान के संभाषणों को रूप प्रदान करने वाली कई मान्यताओं को बहाउल्लाह की परिकल्पना चुनौती देती है–जैसेकि, नियंत्रित किये जाने की आवश्यकता से बहुत परे, स्व–हित समृद्धि लाता है और प्रगति कठोर प्रतियोगिता के ऊपर ही निर्भर करती है। किसी व्यक्ति के महत्व को मुख्यतः इस आधार पर आंकना कि वह कितना संचय कर सकता है और दूसरों की तुलना में वह कितनी वस्तुओं का उपभोग कर सकता है, यह पूर्णतः बहाई विचार के प्रतिकूल है। किन्तु न ही बहाई शिक्षाएँ विरासत में पाई धन–सम्पत्ति को अरुचिकर या अनैतिक मानकर शीघ्रता से उसकी समाप्ति का समर्थन करती हैं, और वैराग्य की मनाही है। धन–सम्पत्ति को मानवता की सेवा करनी चाहिये। इसका उपयोग आध्यात्मिक सिद्धांतों के अनुरूप होना चाहिये; प्रणालियों को उन आध्यात्मिक सिद्धांतों की रोशनी में ही बनाना चाहिये। और बहाउल्लाह के स्मरणीय शब्दों में ''किसी प्रकाश की तुलना न्याय के प्रकाश के साथ नहीं की जा सकती। विश्व में व्यवस्था और राष्ट्रों में शांति की स्थापना इस पर निर्भर करती है।''

यद्यपि बहाउल्लाह ने अपने 'प्रकटीकरण' में एक विस्तृत आर्थिक प्रणाली का वर्णन नहीं किया है, 'उसकी' शिक्षाओं के सम्पूर्ण संग्रह में मानव समाज के पुनर्गठन का एक विषय अटल रहा है। इस विषय पर विचार करने पर, अपरिहार्य रूप से अर्थशास्त्र का प्रश्न उत्पन्न होता है। निःसंदेह, बहाउल्लाह द्वारा कल्पित भविष्य की व्यवस्था, वर्तमान पीढ़ी द्वारा अनुमान किये जा सकने से कहीं अधिक परे है। हालाँकि, इसका संभावित प्रादुर्भाव 'उसके' अनुयायियों के द्वारा आज 'उसकी' शिक्षाओं को प्रभाव में लाने के लिये किये गये जोरदार प्रयास पर निर्भर करेगा। इसे ध्यान में रखते हुए, हमें आशा है कि निम्नलिखित टिप्पणियाँ मित्रों के द्वारा विचारोत्पादक अविरत चिन्तन को बढ़ायेंगी। उद्देश्य यह है कि समाज के कामकाज में इस प्रकार प्रतिभागिता कैसे करना जो दैविक निर्देश के अनुरूप हों और किस प्रकार, व्यवहारिक रूप से, न्याय तथा उदारता, सहकार्यता तथा पारस्परिक सहयोग के द्वारा सामूहिक समृद्धि बढ़ सकती है।

बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के आर्थिक जीवन के आशय समझने के हमारे आह्वान का अभिष्ट, बहाई संस्थाओं और समुदायों तक पहुँचना है, किन्तु यह व्यक्तिगत अनुयायी को निर्देशित है। यदि सामुदायिक जीवन के एक नये प्रतिरूप को, जो कि 'उनकी' शिक्षाओं के प्रतिमान पर आधारित हो, उभर कर आना है, तो क्या निष्ठावानों की टोली को स्वयं अपने जीवन में आचरण की शुद्धता को प्रदर्शित नहीं करना चाहिये, जो इसके लक्षणों में सर्वाधिक विशिष्ट में से एक है ? एक बहाई का चयन – एक कर्मचारी या नियोक्ता, उत्पादक या उपभोक्ता, ऋणी या ऋणदाता, हितकारी या हितग्राही के रूप में – एक असर छोड़ता है, और सामंजस्यपूर्ण जीवन बिताने के नैतिक कर्त्तव्य की मांग है कि व्यक्ति के आर्थिक निर्णय उच्च आदर्शों के अनुकूल होना चाहिये, कि व्यक्ति के लक्ष्यों की पावनता, उन लक्ष्यों को पूरा करने की उसके कार्यों की पावनता के समरूप हो। स्वभावतः, मित्र आदतन किसकी अभिलाषा की जाये के मानदण्ड को निर्धारित करने के लिये, प्रभुधर्म की शिक्षाओं को देखते हैं। क्योंकि इस समुदाय का समाज के दृढ़ीकरण के साथ जुड़ने का अभिप्राय है कि सामाजिक अस्तित्व के आर्थिक आयाम को और अधिक संकेन्द्रित ध्यान प्राप्त होना चाहिये। विशेषकर उन क्लस्टरों में जहाँ सामुदायिक निर्माण की प्रक्रिया बड़ी संख्याओं को अपनाना

प्रारम्भ कर रही है, 'बहाई लेखों' में निहित धार्मिक शिक्षाओं को परिवारों, पड़ोसियों और लोगों के मध्य आर्थिक संबंधों को प्रेरित करना चाहिये। वर्तमान की जिस व्यवस्था ने उन्हें घेरा है, उसमें जो भी मूल्य उपलब्ध हैं उनसे संतुष्ट न होकर, मित्रों को उनके जीवन में प्रभुधर्म की शिक्षाओं को लागू करने और, उनकी परिस्थितियाँ उन्हें जो अवसर प्रदान करती हैं उनका उपयोग करते हुए, वे जहाँ भी रहते हों वहाँ आर्थिक न्याय और सामाजिक प्रगति में अपना स्वयं का व्यक्तिगत व सामूहिक योगदान देने पर विचार करना चाहिये। इस प्रकार के प्रयास, इस संदर्भ में, ज्ञान के एक बढ़ते हुए भंडार में वृद्धि करेंगे।

इस संदर्भ में जिस आधारभूत अवधारणा की छान–बीन करना है, वह है मनुष्य की आध्यात्मिक वास्तविकता। बहाउल्लाह के प्रकटीकरण में, प्रत्येक मानव में अन्तर्निहित भद्रता का स्पष्टतः दावा किया गया है; यह बहाई विश्वास का एक आधारभूत सिद्धांत है, जिस पर मानवजाति के भविष्य की आशा निर्मित है। ईश्वर के सभी नामों तथा गुणों–'वह' 'जो' 'कृपालु', 'प्रदाता', 'उदार' है–को प्रकट करने की क्षमता आत्मा में होती है, इसकी पुष्टि बारम्बार 'पावन लेखों' में की गई है। आर्थिक जीवन ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, विश्वास पात्रता, उदारता तथा आत्मा के अन्य गुणों को अभिव्यक्त करने का कार्यक्षेत्र है। व्यक्ति केवल स्व–हितपरायण एक आर्थिक इकाई नहीं है, जो विश्व के भौतिक संसाधनों में से हमेशा अधिक बड़े हिस्से पर दावा करने का प्रयास करता रहता है।'' ''मनुष्य की उत्कृष्टता सेवा व गुण में निहित है'', बहाउल्लाह दृढ़ता से कहते हैं, ''और धन व सम्पत्ति के दिखावे में नहीं।'' और आगे : ''अपने बहुमूल्य जीवन के धन का हानिकर व भ्रष्ट आसक्तियों का पीछा करने में अपव्यय न करो, न ही अपने प्रयासों को अपने व्यक्तिगत हित के लिये प्रयुक्त करो।'' स्वयं को अन्य की सेवा में अर्पित करके किसी के जीवन का अर्थ व उद्देश्य प्राप्त होता है वह अपने आप समाज के उत्थान में योगदान देता है। 'अपने' प्रतिष्ठित आलेख ''दिव्य सभ्यता का रहस्य' की शुरूआत में ही अब्दुल–बहा कहते हैं :

> और किसी व्यक्ति का सम्मान और विशिष्टता इसमें निहित है, कि उसे विश्व के सभी सामान्य लोगों के बीच सामाजिक भलाई का स्रोत होना चाहिये। क्या इससे बड़ा कोई उपहार हो सकता है, कि कोई व्यक्ति अपने भीतर झांकने पर, पाता है कि ईश्वर की सम्पुष्टि की कृपा से वह अपने साथी मानवों के लिये शांति तथा कल्याण, सुख तथा लाभ का कारण बना है ? नहीं, एकमेव सत्य ईश्वर की सौगंध, इससे अधिक बड़ा परमानन्द, सम्पूर्ण आनन्द नहीं है।

इस रोशनी में देखने से प्रतीत होता है कि अनेकों सामान्य आर्थिक गतिविधियाँ नवीन महत्व प्राप्त करती हैं क्योंकि उनमें मानव कल्याण और समृद्धि में वृद्धि करने की अन्तर्निहित शक्ति होती है। मास्टर स्पष्ट करते हैं ''प्रत्येक व्यक्ति का एक व्यवसाय, एक व्यापार या एक कौशल होना चाहिये, जिससे वह अन्य लोगों का बोझ उठा सके।'' बहाउल्लाह के द्वारा गरीबों को प्रेरित किया गया कि ''परिश्रम करें और जीवन–निर्वाह के साधन कमाने के लिये प्रयास करें'', जबकि जिनके पास धन है उन्हें ''गरीब की ओर अत्यधिक ध्यान देना चाहिए।'' अब्दुल–बहा ने इस बात की पुष्टि की है कि ''धन उच्चतम स्तर पर प्रशंसनीय है यदि वह व्यक्ति द्वारा वाणिज्य, कृषि, कला और उद्योग में स्वयं के प्रयासों व ईश्वर की कृपा के द्वारा प्राप्त किया गया हो, और यदि उसे परोपकारी उद्देश्यों पर खर्च किया जाये।'' साथ ही, निगूढ़ वचन इसके संकटपूर्ण आकर्षण की चेतावनियों से परिपूर्ण है, कि धन अनुयायी तथा उसकी श्रद्धा के उपयुक्त पात्र के बीच एक ''महान रुकावट'' है। तब इसमें आश्चर्य नहीं कि बहाउल्लाह उस धनवान के स्थान की सराहना करते हैं जो धन द्वारा अनन्त साम्राज्य में प्रवेश से अवरुद्ध नहीं है; ऐसी आत्मा का प्रकाश ''स्वर्ग के निवासियों को वैसे ही जगमगा देगा जैसाकि सूर्य धरती के लोगों को प्रकाशित करता है।'' अब्दुल–बहा घोषित करते हैं कि ''यदि एक न्याय संगत और साधन सम्पन्न व्यक्ति ऐसे उपायों की पहल करता है जो वैश्विक रूप से जनसाधारण को सम्पन्न बनाये, तो इससे बढ़कर कोई उपक्रम नहीं हो सकता, और ईश्वर की दृष्टि में इसका स्थान सर्वोच्च उपलब्धि का होगा।'' क्योंकि धन सर्वाधिक प्रशंसनीय है ''बशर्ते सभी लोग सम्पन्न हों।'' स्वयं के जीवन का परीक्षण करके, कि आवश्यकता क्या है और तब हुकूकुल्लाह के विधान के संबंध में अपने दायित्व का

आनन्दपूर्वक निर्वाह करना, यह व्यक्ति की प्राथमिकताओं में संतुलन लाने का एक अपरिहार्य अनुशासन है, व्यक्ति के पास जो भी धन है उसको पवित्र करे, और आश्वस्त हो कि जो ईश्वर के अधिकार का हिस्सा है, वह अधिक लाभ उपलब्ध कराता है। सदा, संतोष व मितव्ययता, परोपकारिता व सहानुभूति, त्याग व 'सर्वशक्तिशाली' पर भरोसा, ऐसे गुण हैं जो ईश्वर का भय रखने वाली आत्मा को शोभा देते हैं।

भौतिकवादिता की शक्तियाँ काफी विपरीत सोच को बढ़ावा देती हैं : कि खुशी लगातार अधिग्रहण करने में है, कि किसी के पास जितना अधिक हो उतना अच्छा, कि वातावरण की चिंता किसी अन्य दिन के लिये है। ये प्रलोभी संदेश, जो न्याय व अधिकार की भाषा का प्रयोग स्वहित को छिपाने के लिये करते हैं, बढ़ते हुए आरोपित व्यक्तिगत अधिकार को भड़काते हैं। अन्य के द्वारा अनुभव किये गये कष्ट के प्रति उदासीनता एक सामान्य स्थिति हो जाती है, जबकि मौज व ध्यान भंग करने वाले आमोद का लालची की तरह उपभोग किया जाता है। निस्तेज करने वाला भौतिकवाद का प्रभाव प्रत्येक संस्कृति में रिस जाता है, और सभी बहाई यह जानते हैं कि, वे किसी न किसी हद तक अनिच्छापूर्वक दुनिया के देखने के उसके नजरिये को अपना सकते हैं, बशर्ते, वे इसके प्रभावों के प्रति सचेत रहने का प्रयास करें।

अभिभावकों को अत्यधिक सतर्क रहना चाहिये कि, जब बहुत छोटे होते है तब भी, बच्चे उनके वातावरण के आदर्श को ग्रहण कर लेते हैं। किशोर युवा आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम, एक ऐसी उम्र में, जब भौतिकवाद की पुकार अधिक आग्रही होती है, विचारशील विवेक को प्रोत्साहित करता है। वयस्कता प्राप्त होने पर, किसी पीढ़ी के द्वारा बांटी जाने वाली एक जिम्मेदारी आती है, कि दुनियादारी के काम को अन्याय व अपहरण के प्रति आंख न मूंदने दें। एक समय के बाद, प्रशिक्षण संस्थान के पाठ्यक्रमों से, 'ईश्वर के शब्द' के द्वारा, जो गुण व प्रवृत्तियाँ पोषित की जाती हैं वे, व्यक्तियों को उन मिथ्या धारणाओं से, जिनसे जीवन के हर पड़ाव पर दुनिया, सेवा से ध्यान दूर खींचती और स्वार्थ की ओर ले जाती है, उबरने में मदद करती हैं। और अन्ततः, 'ईश्वर के शब्द' का प्रणालीबद्ध अध्ययन और उसके अभिप्रायों की खोज से, व्यक्ति की, भौतिक कार्यकलापों का प्रबंधन दिव्य शिक्षाओं के अनुरूप करने की आवश्यकता की, अन्तर्विवेकशीलता बढ़ती है।

परमप्रिय मित्रों : विश्व में सम्पन्नता और गरीबी की अति बहुत अधिक अरक्षणीय होती जा रही है। जब असमानता कायम रहती है, तो स्थापित व्यवस्था स्वयं के प्रति अनिश्चित हो जाती है और उसके मूल्यों पर शंका की जा रही है। संघर्षरत विश्व भविष्य में जिन भी आपत्तियों का सामना करे, हम प्रार्थना करते हैं कि, 'सर्वशक्तिशाली' 'उसके' प्रियजनों की, उनकी राह की सभी रुकावटों को पार करने और मानवता की सेवा करने में, मदद करेंगे। एक जन समुदाय में बहाईयों की उपस्थिति जितनी अधिक होगी, उसके आस–पास गरीबी के मूल कारणों को संबोधित करने की उसकी जिम्मेदारी उतनी ही अधिक होगी। यद्यपि मित्र अभी इस प्रकार के कार्य करने और संबंधित परिसंवादों में योगदान देना सीखने की प्रारम्भिक स्थिति में हैं, पाँच वर्षीय योजना की सामुदायिक निर्माण की गतिविधि सब जगह धीरे–धीरे किन्तु सतत, आर्थिक गतिविधि के उच्चतर उद्देश्य के बारे में, ज्ञान तथा अनुभव को एकत्रित करने का, एक आदर्श वातावरण निर्मित कर रही है। एक दिव्य सभ्यता के निर्माण के कार्य की चिरकालीन पृष्ठभूमि के सहारे, यह खोज, सामुदायिक जीवन, संस्थागत विचार और व्यक्तिगत कार्य का, आने वाले वर्षों में एक अधिक स्पष्ट लक्षण बन जाये।

–विश्व न्याय मन्दिर

* * *

राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा की अगली बैठक
24, 25 और 26 मार्च 2017, नई दिल्ली में

* * *